Pol. Sc.

Degree Ist Paper Ist

Political Theory

प्र० - व्यवहारवाद क्या है? इसकी विशेषताओं और संक्षिप्त आलोचनाओं का वर्णन करें।

व्यवहारवाद (Behaviouralism)

व्यवहारवाद राजनीति विज्ञान की बीसवीं शताब्दी की एक महत्वपूर्ण देन है। यह परम्परागत राजनीतिशास्त्र की उपलब्धियों का परिणाम है। जब राजनीतिक विश्लेषकों को परंपरागत विश्लेषण-पद्धतियों जैसे - ऐतिहासिक, दार्शनिक, वर्णनात्मक, वैधानिक और संस्थागत के परिणामों से निराशा हुई तो उन्होंने विश्लेषण की नई खोज (अध्ययन-पद्धति) निकाला गया। व्यवहारवाद का उद्देश्य सरकार तथा राजनीति संबंधी सभी घटनाओं को प्रेक्षित (Observed) तथा प्रेक्षण योग्य (Observable) मानव व्यवहार के रूप में व्यक्त करना है। व्यवहारवाद राजनीतिशास्त्र को विज्ञान का स्तर दिलाने का प्रयास है। व्यवहारवादी विज्ञान की भाँति राजनीति विज्ञान में भी सामान्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना चाहते है और इन्हें जीवन की वास्तविकताओं पर आधृत कर अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास करते हैं।

व्यवहारवाद की व्याख्या करते समय बहुत से लोग "व्यवहारवाद" के अन्तर्गत मनुष्य के केवल बाह्य कार्यों को रखते थे क्योंकि ये प्रत्यक्ष रूप से पर्यवेक्षणीय होते थे। व्यवहारवाद के इस अर्थ में केवल सीमित राजनीतिक घटनाओं, संस्थानों और मनुष्य की क्रियाओं का अध्ययन किया जा सकता था। तदपश्चात् व्यवहारवाद के अर्थ में संशोधन लाया गया। और इसे विस्तृत कर मनुष्य की भावनात्मक (affective) प्रेरणात्मक (Cognitive) तथा मूल्यांकनात्मक प्रक्रियाओं को इसके अन्तर्गत लाया गया। जब

Scanned with CamScanner

व्यवहारवादी केवल मनुष्य की बाह्य राजनीतिक क्रियाओं का नहीं, उसके राजनीतिक विश्वासों, मूल्यों एवं लक्ष्यों का भी अध्ययन करते है।

डेविड ईस्टन ने व्यवहारवाद की पूर्वमान्यताओं और लक्ष्यों, जिन्हें उन्होंने इस आंदोलन की "बौद्धिक आधारशिला" (The intellectual foundation-stone) कहा है, इसका उल्लेख उसने निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत किया है।

1. नियमन (Regulation) :— व्यवहारवादियों के अनुसार, मनुष्य के व्यवहार में राजनीतिक समानताएँ ढूंढी जा सकती है। इन समानताओं को अनुसंधान द्वारा खोजकर इन्हें सामान्यीकरण का रूप दिया जा सकता है। मानव व्यवहार का अध्ययन कर मनुष्य के व्यवहार में नियमिततायें खोजी जा सकती है, उनकी सटीक व्याख्या की जा सकती है।

2. सत्यापन (Verification) — सत्यापन की विधि वैज्ञानिकता का आधार है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत मानव व्यवहार के संबंध में प्राप्त जानकारी ऐसी हो जिन्हे वैज्ञानिक विधियों द्वारा जाँचा जा सके और जिनकी पुष्टि की जा सके। अतः व्यवहारवादी मूलतः मनुष्य के पर्यवेक्षणीय राजनीतिक क्रियाकलापों के अध्ययन पर जोर देते है।

3. प्राविधियाँ (Techniques) — व्यवहारवादी अध्ययन की सही प्रविधियों, शोध के उपकरणों और पद्धतियों के उपयोग पर काफी जोर देते है। इनके अनुसार प्राविधियाँ तथा उपकरण स्वयं में इतने प्रमाणिक हों ताकि व्यवहार के पर्यवेक्षण, विश्लेषण तथा लेखबद्ध करने के लिए विशुद्ध साधनों को अपनाया जा सके।

Scanned with CamScanner

4. परिमाणीकरण (Quantification) — व्यवहारवादियों को राज्य में मापन के लिए परिमाणीकरण का सहारा लेना चाहिए। राजनीतिक जीवन की पेचीदगियों को शुद्ध और सही जानकारी प्राप्त करने के लिए माप की कठोर से कठोर प्रक्रिया को अपनाना जरूरी है।

5. मूल्य (Value) - व्यवहारवादी मूल्यों की दृष्टि से तटस्थ रहना चाहते हैं। परंपरावादियों के नैतिक मूल्यों को वे महत्व नहीं देते। व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान राजनीति का वैज्ञानिक अध्ययन है, जिसका नैतिक प्रश्नों से कोई संबंध नहीं है।

6. क्रमबद्धीकरण - (Systematization) - व्यवहारवादीयों के अनुसार अनुसंधान क्रमबद्ध होना चाहिए सिद्धान्त को तथ्य से अलग नहीं किया जा सकता और तथ्यों के विश्लेषण में सिद्धान्त की उपेक्षा नहीं की जा सकती। ऐसे सिद्धान्तों को खोजकर वे प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति सामान्य सिद्धान्त की खोज करते हैं।

7. विशुद्ध विज्ञान (Pure Science) — व्यवहारवादी मूलतः "विशुद्ध विज्ञान" के दृष्टिकोण को अपनाते हैं। अतः वे विशुद्ध शोध को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं और इसका उपयोग विशिष्ट सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में करते हैं। उनका उद्देश्य तत्कालीन सामाजिक समस्याओं की खोज करना और दूर करने के लिए समाधान खोजना है।

8. एकीकरण (Integration) — व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान का अन्य सामाजिक विज्ञान के साथ एकीकरण चाहते हैं। व्यवहारवादी इस थ्योरी द्वारा से सहमत है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सांस्कृतिक और कार्यों के बीच सीमा-रेखा निश्चित नहीं की जा सकती है। किसी भी पहलू को सम्पूर्ण जीवन के विस्तृत संदर्भ में समझा जा सकता है। अतः किसी भी राजनीतिक घटना या तथ्य के अध्ययन के लिए यह आवश्यक है कि समाज में आर्थिक

Scanned with CamScanner

तथा अन्य
सांस्कृतिक, घटनाएँ घट रही है। अतः व्यवहारवाद ने समाज-मनोविज्ञान समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र को राजनीतिक अध्ययन के समीप लाकर उसको पद्धतियाँ, सिद्धान्त उपलब्धियों और दृष्टिकोण दिए है।

व्यवहारवाद की उपरोक्त विशेषताओं से यह स्पष्ट होता है कि यह राजनीति विज्ञान को "राजनीतिक का विज्ञान" (Science of Politics) की स्थिति प्रदान करने का प्रयास किया है। यद्यपि इसकी मूल विशेषता राजनीतिशास्त्र में विज्ञान की प्रविधियों का प्रयोग एवं वैज्ञानिक अन्वेषण की रीतियों को अपनाना है, लेकिन इसे इतना समझना भूल होगी। व्यवहारवाद केवल शोध-प्रणाली के क्षेत्र में ही क्रांति नहीं है, बल्कि विषयवस्तु के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है। इसने राजनीति विज्ञान को नई दिशा दी, भाषा, पद्धतियों और नवीन दिशाएं प्रदान की हैं। सबसे बढ़कर इसने राजनीति विज्ञान को एक ~~अनुभव~~ अनुभवात्मक विज्ञान एवं अंतर-अनुशासनिक विषय बना दिया है।

व्यवहारवादियों के उपरोक्त विशेषताओं के सम्बन्ध में कुछ राजनीतिक विचारक इसकी आलोचना भी करते हैं। आलोचकों के अनुसार, व्यवहारवादी धार्मिक कट्टरपंथियों के समान हैं। आलोचकों ने कहा है कि व्यवहारवादी एक ही साथ मर्यादित और अहंकारी है, दूसरी ओर वे किसी वस्तु के अस्तित्व को महत्व देने को तैयार नहीं है जिसे गिना, तौला या मापा नहीं जा सके।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि आलोचनाओं के बावजूद राजनीति विज्ञान में व्यवहारवादी क्रांति का महत्व कम नहीं है। उसने राजनीति विज्ञान के स्वरूप का परिवर्तन करने में बड़ा योगदान किया है। डेविड ईस्टन ने कहा है "व्यवहारवाद सम्पूर्ण समाज विज्ञानों में विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक सिद्धान्तों का शुभारम्भ है। इसने आधुनिक राजनीतिकशास्त्र का स्वरूप भी बदल दिया है।"

Scanned with CamScanner